संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की अर्द्धवार्षिक यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड–36, अंक–1 आईएसएसएन : 2321–2608 जनवरी-जून 2024

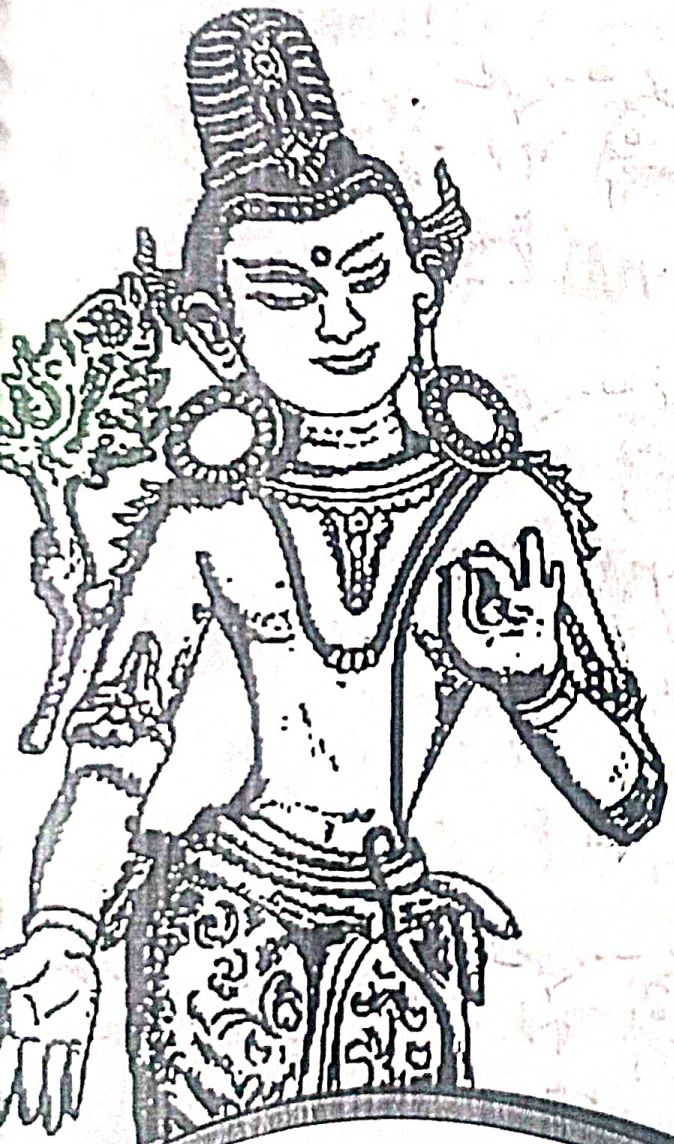

भारतीय संचार सिद्धांत

भारतीय जन संचार संस्थान

संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की अर्द्धवार्षिक यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका
खंड-36, अंक-1 जनवरी-जून 2024 आईएसएसएन: 2321-2608

संचार माध्यम के बारे में:

'संचार माध्यम' (ISSN : 2321-2608) भारतीय जन संचार संस्थान (नई दिल्ली) की संचार, मीडिया, पत्रकारिता और उससे संबंधित मुद्दों पर केंद्रित हिंदी में प्रकाशित सामग्री चयन में उच्च मानदंडों का पालन करने वाली अग्रणी और यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका है। इसका प्रकाशन 1980 में आरंभ हुआ और आज यह हिंदी भाषा में संचार, मीडिया और पत्रकारिता से संबंधित विषयों पर विभिन्न प्रकार के विचारों, टिप्पणियों, पुस्तक समीक्षा और मौलिक शोध-पत्रों के प्रकाशन का प्रतिष्ठित मंच है। इसमें मीडिया से संबंधित सभी प्रकार के विषयों पर मौलिक अकादमिक शोध और विश्लेषण प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक शोध के उच्चतर मूल्यों का पालन करते हुए 'संचार माध्यम' में प्रकाशन से पूर्व सभी शोध पत्रों/आलेखों के लिए निष्पक्ष समीक्षा की एक कठोर प्रक्रिया का पालन किया जाता है। भारतीय जन संचार संस्थान के प्रकाशन विभाग द्वारा इसका प्रकाशन किया जाता है।

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपमा भटनागर

महानिदेशक,
भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

संपादक

प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार

प्रोफेसर, अँग्रेजी पत्रकारिता
भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

संपादक मंडल

श्री अच्युतानंद मिश्र

वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय

डॉ. सच्चिदानंद जोशी

पूर्व कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जन संचार विश्वविद्यालय, रायपुर एवं सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

प्रो. ओम प्रकाश सिंह

पूर्व प्रोफेसर एवं निदेशक, महामना मदनमोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

प्रो. पवित्र श्रीवास्तव

विभागाध्यक्ष, विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. गोविंद सिंह

डीन अकादमिक और पाठ्यक्रम निदेशक, रेडियो एवं टीवी पत्रकारिता, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. आनंद प्रधान

प्रोफेसर, भारतीय भाषा विभाग, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. अनिल कुमार सौमित्र

प्रोफेसर एवं क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय जन संचार संस्थान, जम्मू परिसर

प्रो. प्रमोद कुमार

प्रोफेसर, अँग्रेजी पत्रकारिता एवं संपादक, 'संचार माध्यम', भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. शुचि यादव

अध्यक्ष, मीडिया अध्ययन केंद्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. राजेश कुशवाहा

सह आचार्य, भारतीय जन संचार संस्थान, अमरावती परिसर

डॉ. राकेश उपाध्याय

सह आचार्य, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. विनीत उत्पल

सहायक आचार्य, भारतीय जन संचार संस्थान, जम्मू परिसर

श्री संत समीर

एसोसिएट प्रकाशन, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

भारतीय जन संचार संस्थान की ओर से वीरेंद्र कुमार भारती द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

सभी तरह के संपादकीय पत्राचार और लेख भेजने के लिए ***संपादक, संचार माध्यम,*** *भारतीय जन संचार संस्थान, जेएनयू न्यू कैंपस, अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110067 (भारत) को संबोधित किया जाना चाहिए (दूरभाष : 91-11-26742920, 26741357)*

ईमेल : sancharmadhyamiimc@gmail.com, drpk.iimc@gmail.com

जर्नल का वेब लिंक : http://iimc.gov.in/content/426_1_AboutTheJournal.aspx

वेबसाईट : www.iimc.gov.in

'संचार माध्यम' में प्रकाशित विचार लेखकों की अपनी अभिव्यक्ति हैं। भारतीय जन संचार संस्थान का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

जनवरी-जून 2024, खंड-36, अंक-1
आईएसएसएन : 2321-2608

टाइटल कोड : DELHIN28999
सदस्यता शुल्क : ₹ 200 प्रति अंक
(वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 400)

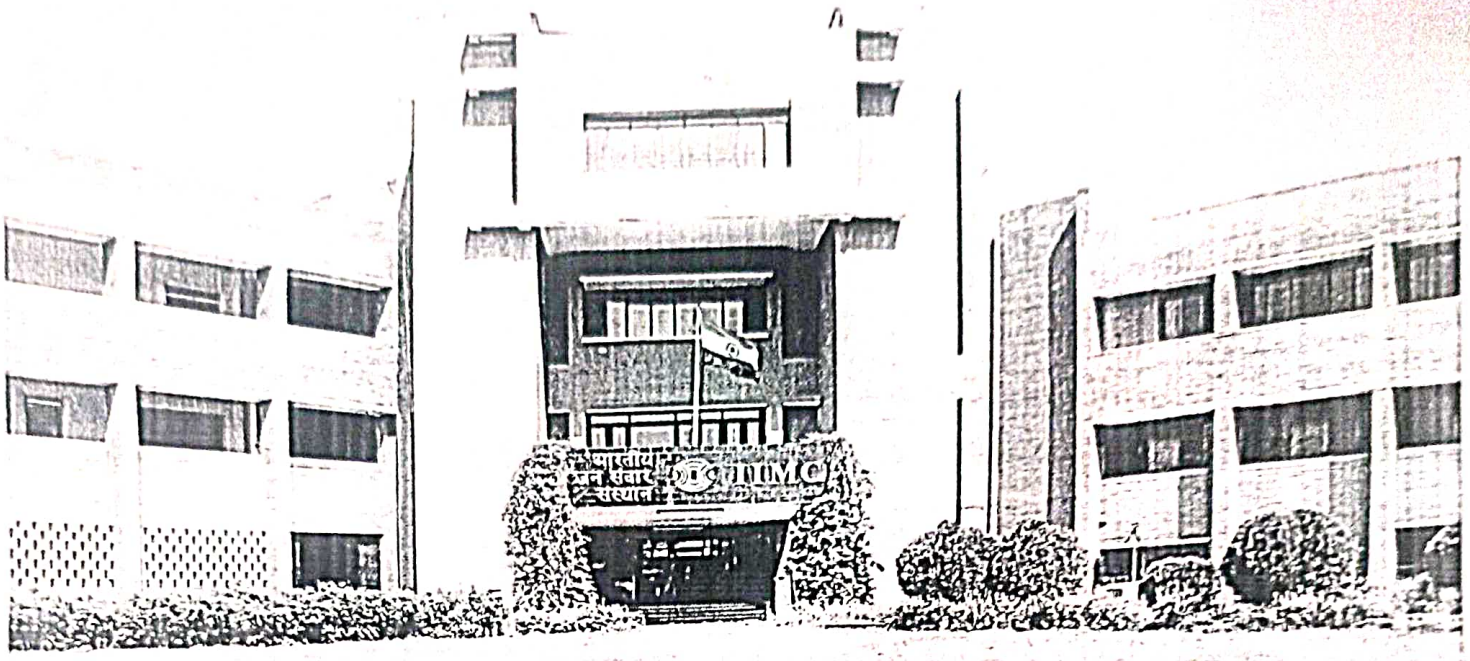

भारतीय जन संचार संस्थान | भारत का नंबर एक मीडिया संस्थान

स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

• अंग्रेजी पत्रकारिता • हिंदी पत्रकारिता • रेडियो और टीवी पत्रकारिता • विज्ञापन एवं जनसंपर्क • उड़िया पत्रकारिता • मलयालम पत्रकारिता • उर्दू पत्रकारिता • मराठी पत्रकारिता • डिजिटल मीडिया

नवीनतम और सुसज्जित सुविधाएँ

• साउंड और टीवी स्टूडियो तथा ऑडियो विजुअल सेटअप • डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक कैमरों के साथ टीवी और वीडियो प्रोडक्शन • मल्टी कैमरा स्टूडियो सेटअप • नॉन-लीनियर वीडियो एडिटिंग • एडिटिंग कंसोल • डिजिटल साउंड रिकॉर्डिंग • डीएसएलआर कैमरा • 4K वीडियो कैमरा • प्रोजेक्टर और वातानुकूलित कक्षाएँ • कंप्यूटर लैब • मल्टीमीडिया सिस्टम • वॉयस रिकार्डर, ग्राफिक और लेआउट डिजाइनिंग • अपना रेडियो 96.9 एफएम

छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा

• सीखने के मजबूत और व्यावहारिक तरीके • नवीनतम तकनीक और सॉफ्टवेयर के साथ ज्ञान को बढ़ाना • विशेष बीट रिपोर्टिंग सत्र • मीडिया उद्योग के विशेषज्ञों के व्याख्यान

भारतीय जन संचार संस्थान
(सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्त संस्थान)

अरुणा आसफ अली मार्ग, जेएनयू न्यू कैंपस, नई दिल्ली-110067
फोन: 011.26742920/2961 वेबसाइट: www.iimc.gov.in I ईमेल: iimc1965@gmail.com

मुद्रक और प्रकाशक प्रो. (डॉ.) वीरेंद्र कुमार भारती, प्रमुख-प्रकाशन विभाग, द्वारा भारतीय जन संचार संस्थान के लिए जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., B-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा भारतीय जन संचार संस्थान, अरुणा आसफ अली मार्ग, नया जेएनयू कैंपस, नई दिल्ली-110067 से प्रकाशित। संपादक : प्रो. (डॉ.) [illegible]

संचार माध्यम
भारतीय जन संचार संस्थान की यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड 36 (1) आईएसएसएन: 2321-2608 जनवरी-जून 2024

विषय सूची

1. प्राचीन भारतीय संचार सिद्धांत : परंपरा और प्रयोग 1
प्रो. कृपाशंकर चौबे

2. संचार-व्याकरण का आधार एकात्म मानव दर्शन 11
प्रो. ओमप्रकाश सिंह

3. श्रीहरिवंशपुराण में संचार के विविध आयाम 15
नेहा कुमारी

4. मार्कंडेय पुराण में संचार : एक अध्ययन 21
पूजा शुक्ला

5. पाणिनि रचित अष्टाध्यायी में भाषा और संचार कला की अवधारणा 27
डॉ. उमेश कुमार और डॉ. श्वेता पांडेय

6. वाल्मीकि रामायण में संचार के विविध संदर्भ 31
डॉ. लोकनाथ

7. भारतीय संचार परंपरा में आचार्य अभिनवगुप्त के योगदान का अध्ययन 41
डॉ. जयप्रकाश सिंह

8. संस्कृत नाटकों में राम के स्वरूप का अध्ययन 46
डॉ. श्रुति रंजना मिश्रा

9. गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का अध्ययन 51
डॉ. नरेश कुमार और डॉ. प्रीति सिंह

10. गोंडी चित्रकला में जनजातीय जीवन का अध्ययन 60
मोनिका शर्मा

11. भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रकारिता में राष्ट्रचेतना का अध्ययन 66
पूनम कुमारी और डॉ. अनिल कुमार निगम

12. आधुनिक संचार विशेषज्ञों की दृष्टि में दीनदयाल उपाध्याय का संचार कौशल 71
आकाश दीप जरयाल और प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार

13. भारतीय टेलीविजन : निजीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन, तकनीकी बदलाव और संचार के विकास में कॉमेडी कला का योगदान 80
अरुण पटेल

14. पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल फोन का प्रभाव 87
(उत्तराखंड से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)
सुमित जोशी, डॉ. चेतन भट्ट और डॉ. राकेश चंद्र रयाल

15. डिजिटल संचार माध्यमों के दौर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा : राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन 95
प्रो. सुबोध कुमार और डॉ. आलोक चौहान

संचार माध्यम | खंड 36(1) : 51-59, जनवरी-जून 2024
यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका, आईएसएसएन: 2321-2608

गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का अध्ययन

डॉ. नरेश कुमार[1] और डॉ. प्रीति सिंह[2]

सारांश

दस गुरु परंपरा द्वारा शुरू से ही साहित्यिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन व संरक्षण प्रदान किया गया। इन गुरुओं का साहित्य के विविध क्षेत्रों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें गुरु गोबिंद सिंह जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे सिक्ख गुरु परंपरा में दसवें गुरु हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विविध विषयों पर उनकी रचनाओं का साहित्य में अनुपम योगदान है। उनके साथ उनके 52 चिंतकों ने साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कवियों ने प्रत्येक विषय को आधार बनाकर रचनाएँ कीं। इन्होंने चाणक्य नीति, हितोपदेश और महाभारत के कई पर्वों का भाषानुवाद किया। इसी प्रकार कुछ कवियों ने गुरुजी के जीवन को साहित्य के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य किया। अधिकतर कवियों की फुटकर रचनाएँ उपलब्ध हैं और कुछ कवियों की रचनाएँ ग्रंथ रूप में उपलब्ध हैं। अणिराय, आलम, अमृतराय, धना, सेनापति जैसे कवियों ने दरबार की शोभा को बढ़ाने का कार्य किया। उनके द्वारा रचित साहित्य आज के समय में गुरु गोबिंद साहिब के जीवन को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है। उनकी अधिकतर रचनाएँ गुरु गोबिंद साहिब की युद्ध रणनीतियों और युद्धों का वर्णन करती हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी की दरबार की विरासत न केवल सिख संस्कृति को समृद्ध करती है, अपितु भारत के साहित्य में अपना अनुपम योगदान देती है।

संकेत शब्द : श्री गुरु गोबिंद सिंह, आनंदपुर साहिब, विद्याधर, विद्या दरबार, दरबारी कवि, पाँवटा साहिब

प्रस्तावना

श्री गुरु गोबिंद सिंह अनेक प्रतिभाओं से संपन्न महापुरुष हैं। वे योद्धा, सेनानी और संत होने के साथ-साथ साहित्य रचयिता भी थे। उन्होंने विविध भाषाओं में रचना कर साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया। उनकी साहित्यिक विरासत अत्यधिक समृद्ध थी तथा कला-साहित्य के लिए भी उनका अगाध प्रेम था। उनके साहित्य को अधिक समृद्ध बनाने के लिए उनके दरबारी कवियों का महत्त्वपूर्ण प्रदेय रहा है। उनके दरबार में 52 कवि थे, जो बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कवि थे। विविध विषयों को आधार बनाकर इन बावन कवियों ने साहित्य सृजन कर विद्या दरबार को और अधिक समृद्ध किया। इन कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में रहकर उनके जीवन को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन कवियों की रचनाओं में गुरु गोबिंद सिंह के संपूर्ण जीवनवृत्त के साथ उनकी वीरता और युद्धों का सहज और सजीव चित्रण प्राप्त होता है। उन्होंने पंजाबी, फारसी और ब्रज भाषाओं में साहित्य की रचना की और अपने साहित्य को जनमानस तक पहुँचाने का अतुलनीय कार्य किया।

शोध प्रविधि एवं शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों के जीवन और रचनाओं का अध्ययन करना है। आज भी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार और उनके दरबारी कवियों की पर्याप्त जानकारी एक साथ उपलब्ध नहीं है। उनकी रचनाओं के माध्यम से ही उनके दशम गुरु के दरबार में होने का अनुमान लगाया जा सकता है। ये दरबारी कवि विविध भाषाओं के ज्ञाता थे, जिस कारण इन कवियों की रचनाओं में भाषाई विविधता परिलक्षित होती है। इनकी कुछ रचनाएँ फुटकर रूप में तो कई रचनाएँ ग्रंथ रूप में उपलब्ध हैं। इन रचनाओं का मूलाधार गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन दर्शन, युद्ध और वीरता का वर्णन था। साथ ही तत्कालीन समाज की अनेक स्थितियों का चित्रण भी इन कवियों की रचनाओं में प्राप्त होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने आनंदपुर में रहकर अपने 'विद्या दरबार' की स्थापना की, जहाँ कवियों ने अनेक विषयों में अपनी रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं का संकलन कर उस ग्रंथ को 'विद्याधर' नाम दिया गया। अधिकतर कवियों की रचनाओं के उपलब्ध न होने के कारण उन्हें बावन कवियों की श्रेणी में रखना एक विवादास्पद विषय है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन विवादों का ध्यान रखते हुए कुछ कवियों की रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्य के क्षेत्र में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। गुरु तेग बहादुर सिंह जी के बलिदान के पश्चात् नौ वर्ष की आयु में वह दस गुरु परंपरा के दसवें गुरु बनें। उन्होंने समाज कल्याण में अपना सर्वस्व जीवन लगा दिया। 'गुरु गोबिंद सिंह जी का नाम लेते ही आज का भारतीय एक अपूर्व गौरव और उल्लास का अनुभव करने लगता है। 'वीर' शब्द के अंदर जितनी भी गरिमा, परंपरा-क्रम से हमारे चित्त में संचित है वह सब साकार हो उठती है। पवित्र चरित्र, अडिग उत्साह, अकुंठ, साहस, अकृत्रिम, सौंदर्य, विद्या और तपस्या का नियत संरक्षण और मनोबल का आश्रय भंडार ही 'वीर' है। गुरु गोबिंद सिंह इन सब गुणों के मूर्तिमान हैं' (द्विवेदी, 2021, पृष्ठ 58)। गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर, 1666 को बिहार के पटना शहर में हुआ था। इस भूमि का इतिहास त्याग, समर्पण और साहस से भरा है। उन्होंने अपनी रचना 'विचित्र नाटक' (बचित्तर नाटक) में अपने जन्म स्थान का वर्णन करते हुए लिखा है :

'मुर पित पूरब कियसी पयाना।
भाँति भाँति के तीरथ नाना।

[1]सहायक प्राध्यापक, पंजाबी एवं डोगरी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, ईमेल : nareshaman2002@hpcu.ac.in
[2]सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश : ईमेल : drpreetisingh10001@gmail.com

जब ही जात त्रिवेणी भये।
पुन्न दान दिन करत बितये।
तही प्रकाश हमारा भयो।
पटना शहर बिखै भव लयो।'

(सिंह, 2002, पृष्ठ 21)

श्री गुरु गोबिंद सिंह ने अपना आरंभिक समय पटना शहर के हरमंदिर साहिब में बिताया। यहीं से ही उनकी आरंभिक शिक्षा हुई। गुरु गोबिंद सिंह जी बचपन से ही अपनी माता से वीरों की गाथाएँ सुना करते थे। साथ ही पिताजी की शौर्य गाथाओं ने उनके जीवन को अत्यंत प्रभावित किया। पिता द्वारा गुरु गोबिंद सिंह जी को क्षत्रिय धर्म की शिक्षा दी गई। शस्त्र के साथ-साथ उन्होंने शास्त्र का भी ज्ञान लिया। उन्हें साहित्य का अथाह ज्ञान था, जिसका प्रभाव उनकी रचनाओ में पूर्ण रूप से देखा जा सकता है। गुरु गोबिंद सिंह अनेक भाषाओ के ज्ञाता तथा भाषाविद थे। उनकी रचनाओं में ब्रज, पंजाबी और फारसी भाषाओं के कई शब्दों का प्रयोग बड़े सुंदर ढंग से प्राप्त होता है। अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में गुरु गोबिंद सिंह जी आनंदपुर में रहे और कुछ समय पश्चात् वह सिरमौर की पहाड़ियों के पाँवटा नामक स्थान में जा बसे। गुरु गोबिंद सिंह जी वहाँ तीन वर्ष रहे। पाँवटा में रहकर ही उनकी साहित्यिक यात्रा को नई गति एवं दिशा मिली। 'जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने पाँवटा साहिब बसाया तब वहाँ आध्यात्मिक सभाएँ शुरू हो गई। यहाँ 52 कवियों की रचनाएँ भी हुई' (सिंह, 2017, पृष्ठ 54)। पाँवटा साहिब में रहकर उन्होंने अनेक रचनाएँ की। यहाँ रहकर उन्होंने 'कृष्णावतार' नामक रचना रची, जिसका उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं :

सत्रह के चवताल में सावन सुदि बुधवार
नगर पाँवटा मों सु मैं रचियो ग्रंथ सुधार।

फिर 'कृष्णावतार' की समाप्ति पर लिखा :

सत्रह पैताल महि सावन सुदि थिति दीप।
नगर पाँवटा सुभ करण जमना वहै समीप।
दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाइ।
अवन वासना नाहि प्रभु धरम जुद्ध को चाइ।।

(सिंह, 2017, पृष्ठ-25)

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन में अनेक युद्ध लड़े। पाँवटा साहिब से लौटने पर गुरुजी ने 1689 ई. में भंगाणी का युद्ध लड़ा। 'विचित्र नाटक' अपनी आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन में हुए युद्धों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवनकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए, जिनमें 'खालसा पंथ' का निर्माण अद्वितीय है। 13 अप्रैल, 1699 ई. को उन्होंने आनंदपुर साहिब में एक विशाल सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में सुदूर क्षेत्रों से लोग एकत्रित हुए। उसके पश्चात् उन्होंने 'खालसा' के माध्यम से लोगों के हृदय में ईश्वरीय भक्ति का संचार करने का कार्य किया और एक जयघोष दिया:

'वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतेह'

(सिंह, 2017, पृष्ठ 6)

गुरु गोबिंद सिंह जी ने समाज में फैली अराजकता और अशांति को दूर करने के लिए जीवनपर्यंत कार्य किया। ऐसा कहा जा सकता है कि उसका जन्म ही धर्म-रक्षा और समाज कल्याण के उद्देश्य से हुआ था। वह एक महान् योद्धा, क्रांतिकारी, राष्ट्रनिर्माता, संत एवं अलौकिक गुणों से संपन्न युग-पुरुष थे। 'गुरु गोबिंद सिंह जी का आविर्भाव उस समय हुआ, जब अकबर द्वारा प्रस्थापित राजनीतिक शांति पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी। औरंगजेब की धार्मिक नीति के कारण देश में हिंदुओं के अंदर प्रतिरोध का भाव जाग्रत हो रहा था' (सिंह, 2017, पृष्ठ 13)। तत्कालीन समाज दो वर्गों में बँटा हुआ था। एक वर्ग वह, जो शासक थे और दरबारी थे और जो केवल दरबार में रहते थे। उनका जीवन विलासपूर्ण, सुखद और आनंदमय होता था। दूसरी ओर सामान्य जनता थी, जो अपने जीवनयापन के लिए प्रतिदिन परिश्रम करती थी। उस समय के राजा अपने भोग-विलास में रहा करते थे। सामान्य जनता से उनका किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं था। साहित्य की स्थिति दयनीय थी। दरबारी कवि राजा से धन के लिए उनके झूठे शौर्य का गुणगान करते थे। उस समय अधिकतर कवियों ने शृंगारिक कविताएँ कीं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इस प्रथा का विरोध कर समाज को भक्ति के मार्ग पर लाने का प्रयास किया और साहित्य को नया रूप देने का कार्य किया। गुरुजी का समय शांति और स्थिरता का समय नहीं था। यह समय सामाजिक अराजकता और राजनैतिक अस्थिरता का समय दिखाई पड़ता है। मुगलों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों को रोकने के लिए उन्होंने समाज को जगाने का प्रयास किया।

प्रत्येक व्यक्ति में अपने युग की परिस्थितियों का प्रभाव पूर्ण रूप से दिखाई पड़ता है और वही प्रभाव उनकी कृति पर भी दिखाई पड़ता है। जैसा आचार्य शुक्ल लिखते हैं : 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है' (शुक्ल, 2021, पृष्ठ-5)। रचनाकार अपनी रचना के कारण समाज में परिवर्तन लाने का काम करता है। गुरु गोबिंद सिंह जी संत होने के साथ ही महान् कवि भी थे। बहुत कम उम्र में उन्होंने पंजाबी, ब्रजभाषा और फ़ारसी भाषाओं में महारत हासिल कर ली थी। फारसी उस समय की राजभाषा थी और पंजाबी उनकी मातृभाषा थी। इन दोनों भाषाओं का ज्ञान उनको था, परंतु उन्होंने अपनी अधिकतर काव्य रचना ब्रजभाषा में की, जो उस समय की साहित्य की भाषा बन चुकी थी। गुरुजी ने इन्हीं भाषाओं में अपने साहित्य का सृजन किया। उन्होंने भक्ति, ऐतिहासिक और अध्यात्म के साथ-साथ वीर काव्य का निर्माण किया। इनकी अधिकतर रचनाएँ 'श्री दशम ग्रंथ' में संकलित हैं। इनके रचनाकाल के संबंध में महीप सिंह लिखते हैं : 'गुरु गोबिंद सिंह की अधिकतर कृतियों का रचनाकाल सन् 1680 से 1700 के मध्य का ही है। इस समय के बीच में भी उन्हें अनेक युद्ध करने पड़े थे, जिसमें से कुछ का वर्णन अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक' में किया है' (सिंह, 2002, पृष्ठ 55)। जैसा कहा गया है कि इन्हें पंजाबी भाषा का पूर्ण ज्ञान था, इसलिए उन्होंने अपनी रचना 'चंडी दी वार' पंजाबी भाषा में लिखी। इसके साथ 'जफरनामा' और 'हिकायतें' जैसी रचनाओं की भाषा फारसी है। इसके अतिरिक्त 'जापु' उनकी एक प्रसिद्ध रचना है, जिसमें आध्यात्मिकता और भक्ति रस पूर्ण रूप से दिखाई पड़ता है। इस रचना में उन्होंने निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का उल्लेख किया। इसके साथ 'अकाल स्तुति' में भी निर्गुण ब्रह्म की भक्ति पर जोर दिया। 'विचित्र नाटक' उनकी आत्मकथा

है, इसमें उन्होंने आनंदपुर के अपने जीवन का एक व्यवस्थित रूप से वर्णन किया। इस प्रकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को शांति का संदेश देने का प्रयास किया। कह सकते हैं कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपना सारा जीवन लोक सेवा में व्यतीत कर दिया।

'स्वभाव से वे कवि थे, परिस्थितियों ने उन्हें योद्धा बनाया। हृदय से वे कवि थे, परिस्थितियों ने बादशाह बनाया। उन्होंने शस्त्र धारण किया, साम्राज्य-स्थापन के लिए नहीं, अन्याय और अत्याचार के विध्वंस के लिए। उन्होंने कविताएँ लिखीं। वाग्विलास के लिए नहीं, उपेक्षित और अभिमानियों में आत्मविश्वास जगाने के लिए। वे संत थे, वे कवि थे, वे लोकनायक थे' (द्विवेदी, 2021, पृष्ठ संख्या 67 & 68)। गुरु गोबिंद सिंह ने मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित समाज में चेतना, उत्साह और साहस का संचार करने का प्रयास किया। इनके द्वारा रचित साहित्य उदारता और सुंदरता से परिपूर्ण दिखाई पड़ता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का परिचय

मध्यकाल से ही मुगलों का अत्याचार अपने चरम पर था। अधिकतर समाज भोग विलास में डूबा हुआ था। उस समय गुरुजी ने समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास किया। मुगलों के अत्याचारों के कारण कई कवियों को दरबार से निराश्रित कर दिया गया। जिस कारण कवियों का अन्य दरबारों की ओर पलायन आरंभ हो गया। इन्हीं कवियों में अधिकतर कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में आश्रय लिया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपना प्रारंभिक समय आनंदपुर साहिब में व्यतीत किया, जिसके पश्चात् उनके दरबार को मुख्य रूप से 'आनंदपुर दरबार' कहा गया। तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उन्होंने अपने दरबार में शस्त्र के साथ-साथ शास्त्र का भी ज्ञान दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी के साहित्य संसार में उनके दरबारी कवियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। दस गुरु परंपरा में गुरु गोबिंद सिंह जी के 52 दरबारी कवियों का उल्लेख मिलता है। उन्होंने कई भाषाओं में रचनाएँ कीं तथा अपने दरबार को उत्कृष्ट बनाने में मुख्य रूप से योगदान दिया। इन दरबारी कवियों ने प्रत्येक विषय पर सुंदर कविताओं की रचना की, जो 'विद्याधर' नामक ग्रंथ में संकलित हैं।

'इस ग्रंथ में भारतीय दर्शन, पुराण और इतिहास के महान् पंडितों का भाषानुवाद संकलित है। आनंदपुर हमले के समय इसका ज्यादातर भाग नष्ट हो गया था, केवल कुछ भाग ही उपलब्ध है। यह दरबारी कवि हजुरी कवि की संज्ञा से परिभाषित किए गए। इन कवियों के समूह को ही 'विद्या दरबार' कहा गया' (पन्नू, 2019, पृष्ठ 17)। उनके दरबारी कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार को प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'इन कवियों की एक सूची संतोष सिंह जी की पुस्तक 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ' में संकलित है। सूची इस प्रकार है : 'उदयराम, अणीराय, अमृतराय, अल्लू, आसा सिंह, आलम, ईश्वरदास, सुखदेव, सुखासिंह, सुदामा, सेनापति, श्याम, हीर, हुसैन अली, हंसराम, कल्लू, कुवरेश, खानचंद, गुणिया, गुरुदास, गोपाल, चंदन, चंदा, जमाल, टहकन, धर्म सिंह, धन्ना सिंह, ध्यानसिंह, नानू, निश्चलदास, निहालचंद, नंदराम अथवा नंदसिंह, नन्दलाल, पिंडी दास, वल्लभ, बल्लू, विधि चंद, बुलंद, बृप, बृजलाल मथुरा, मदन सिंह, मदन गिरी, भल्लू, मल्लू, माला सिंह, मंगल, राम, रावल, रोशन सिंह, लक्खण राय' (सिंह, 2017, पृष्ठ-5569)।

विद्या दरबारी कवियों के संबंध में विद्वानों का मत

विद्या दरबार के कवियों की एक व्यवस्थित सूची प्रस्तुत करने के बाद भाई वीर सिंह जी ने 'गुरु प्रताप ग्रंथ' की टीका लिखी, जिसके पश्चात् उन्होंने उस क्रम में 52 कवियों के साथ सात नाम शामिल कर दिए, जो इस प्रकार हैं: सुक्खू, सुंदर, सोहन सिंह, दया सिंह, मद्धू, मानचंद, अचल दास' (चौधरी, 1976, पृष्ठ-63)। स्पष्ट है कि दरबारी कवियों की संख्या का विषय विवादास्पद है। अपने-अपने मतों द्वारा अलग-अलग विद्वानों ने अपने-अपने हिसाब से कवियों की संख्या को सुनिश्चित किया है। इसी प्रकार जहाँ वीर सिंह जी ने सात कवियों की सूची को शामिल किया, वहीं 'ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने अपने मत के अनुसार नौ कवियों की सूची को शामिल किया और कवियों की संख्या को 61 तक बढ़ा दिया। उन कवियों की सूची इस प्रकार है : मद्धू, रामदास, सेना या सैना, सेखा, रामचंद्र, मानी, सुंदर, ज्ञान, ठाकुर' (चौधरी, 1976 पृष्ठ-63)। परंतु, इन दोनों सूची पर ध्यान देने से पता चलता है कि इनमें 'सुंदर' और 'मधु' नाम समान हैं। इस प्रकार तीनों सूचियों को मिलाकर कवियों की संख्या 66 पहुँच जाती है। इसके साथ ही उपयुक्त कवियों के अतिरिक्त 'देवेंद्र सिंह विद्यार्थी ने तीन सूचियों के 66 कवियों की सूची में पाँच कवियों के नाम जोड़कर कवियों की संख्या 71 कर दी। उन पाँच कवियों की सूची इस प्रकार है : कार्शीराम, सुकवि, सरदा (शारदा), भूपति, प्रह्लाद' (चौधरी, 1976 पृष्ठ-63)।

'श्री प्यारासिंह पद्म जी ने गुरु दरबार में कवियों की संख्या 85 बताई है। उन्होंने प्राप्त सूचियों में 71 कवियों की संख्या में केवल 46 कवियों को प्रामाणिक मानकर 39 कवियों की सूची को प्रस्तुत किया, जो इस प्रकार है : देवीदास, कृपाराम, वृंद, गिरधरचंद, गिरिधर लाल, तनसुख लाहौरी, कपूरचंद त्रिखा, गुरदास सिंह, दाना, केशवदास, चौपासिंह, मनी सिंह, पंडित नंद लाल, बिहारी, जादोराय, फत्तमल, लाल ख्याली, आढ़ा, भगतू, रायसिंह, महासिंह, भोजराज, जगन्नाथ, भगवान दास निरंजनी, सागर, नंदराम गुणकारी, पंडित रघुनाथ, ब्रह्मभट्ट, मानदास बैरागी, हरिजसराइ, पंडित मिठू, मुशकी ढाढी, शबीला ढाढी, कर्ता प्राचीन वार, कर्ता प्रेम अंबोधि, कर्ता अमरनमा, केसोसिंह भट्ट, देसासिंह भट्ट, नर्वद सिंह भट्ट' (चौधरी, 1976 पृष्ठ-64)।

उपर्युक्त सूची में लेखक ने जिन कवियों के नाम रेखांकित किए हैं, वे कवि गुरुजी के समकालीन नहीं है। उनमें से अधिकतर कवियों का समय गुरुजी के समय से पहले है या बहुत बाद का है। 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने बिहारी का समय संवत् 1660 (1603 ई.) माना है' जो गुरु गोबिंद सिंह जी के समय से पहले है। इसी प्रकार केशवदास का समय संवत् 1612 (1555 ई.) माना है, जो गुरुजी के समय से बहुत पहले का है' (शुक्ल, 2021, पृष्ठ-183, 218)। इसलिए यह कहना निरर्थक होगा कि ये कवि गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवि थे। इसके पश्चात् उन कवियों की सूची देखी जा सकती है, जिनके संबंध में निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि वे दशम गुरु के दरबार में उपस्थित थे। वह सूची इस प्रकार है : अणीराय, अमृतराय, आलम, ईश्वरदास, सुखदेव, सुदामा, सेनापति, हीर, हुसैन अली, हंसराम, कुबेरेश, गुरुदास, गोपाल, चंदन, चंद, टहकन, धर्मसिंह, धन्ना सिंह, ध्यानसिंह, नंदसिंह, बृजलाल, मल्लू, मंगल, लक्खण, रामचंद्र, सुंदर, शारदा, काशीराम, नानू, सैना, आसा सिंह, सुकवि, भूपति। इन कवियों की रचनाएँ पूर्ण रूप से उपलब्ध हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि ये कवि गुरु साहिब के दरबारी कवि थे।

विद्या दरबारी कवियों की रचनाओं का अध्ययन

गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों ने उनके दरबार को प्रतिष्ठित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। माना जा सकता है कि गुरुजी के दरबार में उच्च कोटि के कवि थे। उन्होंने कई भाषाओं में रचनाएँ कीं। वे अपना अधिकांश समय रचनाओं को लिखने में व्यतीत करते थे, जिसके पश्चात् वे कवि अपनी रचनाओं को पूर्ण कर गुरुजी के समक्ष प्रस्तुत करते थे और परिणामस्वरूप उन्हें उनकी रचनाओं के लिए पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित किया जाता था। इन कवियों में अधिकतर कवियों को हम गुरु गोबिंद सिंह जी का यशोगान करते हुए पाते हैं। इन दरबारी कवियों ने गुरुजी के अद्वितीय व्यक्तित्व को बड़े ही प्रामाणिक ढंग से उजागर करते हुए अपनी काव्य रचनाओं को सफल बनाया है। अधिकतर कवि गुरु गोबिंद सिंह जी के योद्धा रूप से प्रभावित थे। इसमें से कुछ कवियों ने गुरुजी के गुणों को अपनी कविताओं में बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। 'चंद कवि' अपने छंदों के माध्यम से गुरु गोबिंद सिंह के जीवन और उनके दरबार को सुंदर ढंग से वर्णित करते हुए लिखते हैं :

'कलि में भयो एक मरद नानक है, नाम जाको'
ता ते भये नौ एक ज्योति सुहायो है।
खडगधारी होय महल दसवाँ कहायो है,
तेईयन मैं आए बीच पैठे समाए गुरु
दुनिया बसाए जाए पाँवटाप बसायो है।
सत्य गुरु बचन सार मरद गुरु का विचार,
गोबिंद सिंह कृपा ते दास चंद कहि सुनायो है।।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-70)

इन कवियों में अधिकतर कवियों ने गुरु साहिब के दरबार में अनुवाद का कार्य भी किया। अमृतराय, हंसराज, कुबरेश और मंगल कवि ने महाभारत के 18वें अध्याय का सरल भाषा में और सेनापति ने 'चाणक्य नीति' का साधारण भाषा में अनुवाद किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुरु साहिब जी के दरबार में विद्या के अनेक साधन उपलब्ध थे। 'धन्ना सिंह' गुरुजी के सेवादार थे और प्रसिद्ध कवि के रूप में प्रतिष्ठित थे। इनके जीवन के बारे में कोई अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हैं, परंतु इनके दो सवैये प्रसिद्ध हैं :

'मीन मरे जल के परसे कबहूँ न मरे पर पावक पाए।
हाथी मरे मद के परसे कबहूँ न मरे तन ताप के आए।
तीय मरे पिय के परसे कबहूँ न मरे परदेश सिधाए।
गूढ़ मैं बात कही दिजराज! विचार सके न बिना चित लाए।।
कंवाल मरे रविके परसे कबहूँ न मरे ससि की छबि पाए।
मित्र मरे मीत के मिलिबे कबहूँ न मरे जब दूर सिधाए।
सिंघ मरे जबि मास मिले कबहूँ न मरे जबि हाथ न आए।
गूढ़ में बात कही दिजराज! विचार मरे न चित लाए।।'

(सिंह-2011, पृष्ठ-4467)

'सुंदर कवि' का उल्लेख दशम गुरु के दरबार में मिलता है, परंतु इनके जीवनवृत्त का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उनकी फुटकर रचनाएँ उपलब्ध हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि उन्होंने केवल फुटकर छंदों की ही रचना की है। इनका एक छंद निम्नलिखित है :

'बेसन महिं साम सुनौ, सिंधु मिरजादा मेरु,
मंडल महिं मैं, गुरिआई गुण गाए हो।
सभा के सागर सपूतन के सिरमौर,
सुंदर सुधाधर से सुंदर सजाए हो।
रचन में दान बानि बानी हरी चंद की सी,
बिदत बिनय बड़े बंस पालि आए हो।
तेज को तरनि तरवार को परसराम,
गुरनि महि ऐसे गुरु गोबिंद कहाए हो।'

(सिंह, 1935, पृष्ठ-371)

'शारदा' के बारे में भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इनके भी कुछ छंद उपलब्ध हैं :

'दिस-दिस देस देस एस दिगपाल केते,
आजै करैं काल्ह केते गुनहु गहत हैं।
प्रबल प्रतापी पातसाह साची सुनीयत,
तेरे सिर भार भू को सारदा कहत हैं।
ओजन के सूर महाभोज सो धेर मेरो
और विचार न कीजै दारिद दहत हैं।
हरी माँगे बर देत माँग गुरु गोबिंद को,
करतार माँगे कर तार दे रहत हैं।'

(सिंह, 2011, पृष्ठ-5723)

किसी भी रचनाकार के होने की प्रामाणिकता उसकी रचना के होने से होती है। अगर किसी रचनाकार के नाम के साथ उसकी रचना का नाम न हो तो उसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करना कठिन हो जाता है। गुरु गोविंद सिंह जी के दरबारी कवियों में अधिकतर कवियों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं है, परंतु कुछ कवियों की रचनाएँ आज भी उपलब्ध हैं। जो सूची 'संतोख सिंह' द्वारा दी गई है उसमें निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ उपलब्ध हैं :

क्र. सं.	कवि का नाम	मौलिक रचनाएँ	भाषा-रूपांतरण
1.	अणी राय	जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह	
2.	अमृतराय	फुटकर रचनाएँ	चित्र-विलास, सभा-पर्व (महाभारत)
3.	आसा सिंह	फुटकर रचनाएँ	
4.	आलम	श्यामस्नेही, आलमकेलि, माधवानल, कामकंदला, सुदामा चरित्र, ग्रंथ संजीवन, फुटकर छंद	
5.	ईश्वरदास	फुटकर छंद	
6.	सुखदेव	अध्यात्म प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा, सामुद्रिक शास्त्र	
7.	सुदामा	फुटकर छंद	
8.	सेनापति	गुरु शोभा, सुखसैन ग्रंथ	चाणक्य नीति
9.	हीर	फुटकर छंद	
10.	हुसैन अली	फुटकर छंद	

11.	हंसराम	फुटकर छंद	कर्ण-पर्व महाभारत
12.	कुबेरेश		द्रोण-पर्व महाभारत
13.	गुरुदास	कथा हीर रौंझान की, साखी हीरा घाट की	
14.	गोपाल	अनुभव उल्लास	
15.	चदन	फुटकर छंद	
16.	चदा	फुटकर छंद	
17	टहकन	रतनदाम	अश्वमेध-पर्व महाभारत
18.	धर्म सिंह	पंचतंत्र, कोकसार	
19.	धन्ना सिंह	फुटकर छंद	
20.	ध्यान सिंह	फुटकर छंद	
21.	नन्नू	फुटकर छंद	
22.	नंदराम	नंदराम पचीसी, काडखा	
23.	नंदलाल	दीवान-ए-गाथा, जिंदगीनामा, तौ सौ फौसना, जोत विकास, गजनामा (पंजाबी)	
24.	बुलंद	फुटकर छंद	
25.	बृजलाल	फुटकर छंद	
26.	मल्लु	फुटकर छंद	
27.	मंगल	फुटकर छंद	शल्य-पर्व (महाभारत)
28.	लक्खणराय	हितोपदेश	

जब आनंदपुर साहिब पर मुगलों द्वारा आक्रमण किया गया, उस समय 52 कवियों में अधिकतर कवियों की रचनाएँ नष्ट हो गईं। जिस कारण वर्तमान में उन कवियों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। संतोख सिंह द्वारा दी गई सूची के अनुसार जिन कवियों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं, उनकी सूची इस प्रकार है : उदय राय, अल्लु, सुखा सिंह, सुखिया, श्याम, कल्लू, खान चंद, गुणिया, जमाल, निश्चल दास, निहाल चंद, पिंडी दास, वल्लभ, बल्लू, विधि चंद, वृष, मथुरा, मदन सिंह, मदन गिरी, भल्लु, माला सिंह, राम, रावल और रोशनसिंह। गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवियों में अधिकतर ने फुटकर छंदों की रचना की। इसी के साथ देखा जाए तो अन्य कवियों की रचना ग्रंथ रूप में मिलती है। गुरु साहिब जी के दरबारी कवियों ने अनेक विषयों पर कविताओं का सृजन किया। अधिकतर कवियों की रचनाएँ भक्तिपरक कविताएँ थीं, जिसका उदाहरण हमें 'सुदामा कवि' के एक छंद में देखने को मिलता है :

'एक संग पढ़े अवंतिका संदीपन के
सोई सुध आई तो वुलाई भुझी वामा मैं
पुंगीफल होति तौ असीस देतो नाथ जी कौ,
तंदुक ले दीजै बाँध लीजे फटे जामा मैं
दीन दुआर सुनि कै दयार दरबार मिले,
ऐतो कुछ दीनो पाई अगनती सामा मैं,
प्रीत करि जाने गुरु गोबिंद कै मानें
तंती बहै 'सुदामा' मैं .....'

(सिंह, 2015, पृष्ठ-198)

इसके साथ 'चंदन कवि' के छंद हमें शृंगारिक रूप में दिखाई देते हैं :

'नवसात तिये, नवसात किए, नवसात पिए, नवसात पियाए।
नवसात रचे, नवसात वदे, नवसात पया पहि दायक पाए।
जीत कला नवसात की, नवसात के मुख अचर छाए।
मानहु मेघ के मंडल मैं कवि चदन चंद कलेवर छाए।'

(सिंह, 2015, पृष्ठ-199)

'आसा सिंह' गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि थे। इनके बारे में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। इनके केवल कुछ छंद उपलब्ध हैं :

'मुख करौ मेरी करै करत न पर उपकार।
तिसकौ फिर मैं करौंगी पलटा इहु दरबार।
फटि छाती दो टूक भइ, रुदन करति लिखि जाति।
परस्वारथ उपकार बिन मोहि न उपजत साँत।
ऐसे कलम कहत सब साथ।
सो गुरु पकराई मुहि हाथ।
गुरु की आन जबह सिख दिनी।
सही न मैं चिट्ठी लिखदीनी।
सर्वलक्षमी जगत तुमारी।
मुंचति है इही सृष्टि सारी।।'

(भाई संतोख सिंह, गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रंथ, पृष्ठ 5722)

'नानू अथवा ननुआ' कवि के बारे में कहा जाता है कि वह गुरु तेग बहादुर सिंह के शिष्य थे। इनके बारे में कोई अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है। इनके केवल गेय पदों का उल्लेख मिलता है :

'लोयण निपट लालची मेरे
भूखे धावे तृप्ति न पावे, सदा रहे गुरु मूरति घेरे।
जोड़े हाथ अनाथ सदा यह, अपने ठाकुर केरे चेरे।
हेर ननुआ हैराना, गुरुमूरति विच हरि ही हेरे ।।' (1)
'असाँ साहिब दरस दिखाइया।
खुल्ही वंदी डुल्हदे नैणी
हसदा हसदा आइया।
प्यार आपणा भर भर बुक्कीं।
मन तन साडे पाइया।
ननुए नू होर चित्त न काई
धा सिर चरना ते लाइया'।। (2)

(चौधरी, 1976 पृष्ठ-74)

'सैना अथवा सैणा' भी गुरुजी के दरबारी कवियों में शामिल हैं। यह दरबार में लिखारी का काम किया करते थे। यह इस काम के साथ-साथ कुछ कविताएँ भी रचा करते थे। एक बार लिखारी में किसी प्रकार की भूल हो जाने पर वह घर में जा छिपे, जिसके उपरांत लज्जावश उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी के बुलाने पर उन्हें एक छंद लिखकर भेजा, जो इस प्रकार है :

'जब के प्रभु से बीछुरे, कियो कृषि को ठाट।
व्रिषभन संगति हम करी भए जाट के जाट।
अब का मुख प्रभु कउ दिखराहऊँ।

सिमर नाम नित आनंद पाऊँ।
गुरगति अगम जाण नहि जाई।
नारदादि की मति भरमाई।।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-7)

'सुकवि' गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि थे। इनके जीवनवृत्त के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इनका एक छंद 'गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रंथ' में उद्धृत है :

'जौन देस जइयति नरेसन के पास तहाँ
ठौर-ठौर तुमरो ई जस गाईयति है।
पाईं गहे तेरे पाईं गहे पाइयति कहूँ,
और जाइ गरजाइ गरो पाइयति है।
ऐसे गुरु गोबिंद की सुकवि सरन ताको,
पूरन प्रताप जाको जग छाइयति है।
राजी एजिइत गाजीयत जा के दरबार,
बर बाजी बाँध बाजी लेन आइयति है।।'

(भाई संतोख सिंह, गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रंथ, पृष्ठ-5719)

'भूपति' कवि का जीवनवृत्त अज्ञात है। इनका भी केवल एक छंद 'गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रंथ' में वर्णित है :

'बाजति निशान के दिशान भूप भहिरति,
हासाडोल परति कुबेर हूँ के घर मैं।
होति है अतंक शंक लंक हूँ मैं मानीयति,
रंक है बिभीखन सो डोलति डहर मैं।
भूमैं गुर गोबिंद सों भूपति कहित ठाडें,
भू मैं हमैं राख जो तुहारे आवै घर मैं।
अरिनि की रानी बिललानी चहैं पानी ते,
बै मोतिन की माल लै निचोवति अधर मैं'।।

(भाई संतोख सिंह, गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रंथ, पृष्ठ-5719)

जिन कवियों की रचनाएँ फुटकर हैं, उनके बारे में सामग्री बहुत ही सीमित उपलब्ध है। उन कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं दी। साहित्य में आरंभ से ही अधिकतर कवियों की विशेषता रही है कि वह अपनी रचनाओं से ही समाज को संदेश देने का कार्य करते थे। इसी कारण अधिकतर कवियों की रचनाएँ उपलब्ध हैं, परंतु उनके विषय में कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं है।

गुरु साहिब जी के दरबारी कवियों के कुछ छंद ही उपलब्ध हैं, परंतु कुछ कवियों की जानकारी उपलब्ध है। उनकी रचनाएँ ग्रंथ के रूप में मिलती हैं। उन्होंने गुरुजी के जीवन को एक अलग ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य किया। 'अणीराय' की 'जंगनामा' रचना उपलब्ध है, जिसमें उन्होंने गुरुजी के जीवन तथा उनके और अजीम खाँ के मध्य हुए युद्ध का वर्णन किया है। 'जंगनामा' 69 छंदों का एक वीर काव्य है, जिसमें गुरुजी के योद्धा व्यक्तित्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है। उनका एक छंद निम्नलिखित है :

'खड़े धूहे म्यान ते, बैरी बिलखाने।
जुट्टे दुहूँ मुकाबले, बिज्जू झरलाने।
बाहण मुणसैं घोडेयाँ, घायल घुम्माने।
जुज्झन सौहे सागर दे दरगह परवाने।
मुंड मंडकन मेदनी, एही नेसाने।
जण माली मिहे बाड़ियाँ, खरबूजे काने।।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-78)

'अमृतराय' भी दशम गुरुजी के दरबारी कवि माने गए हैं। भाई संतोख सिंह के 'गुरु-प्रताप-सूर्य- ग्रंथ' में एक कवित्त के अनुसार उन्हें दशम गुरुजी के दरबार में भेजा गया था। दरबार का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं :

'जाही ओर जाऊँ, अति आदर तहाँ पाऊँ,
तेरे गुन गन को अगाऊ गने शेश जू।
हीर चीर मुक्ता जे देति दिन प्रति दान
तिन्है देख अभिलाषति धनेश जू
गुनन में गुनी कवि अग्रित पढ़ाया है मेरो,
जब इनै हेरो प्यार कीजे अमरेश जू।
श्री गुरु गोबिंद सिंह छिरनिधि पार भई,
कीरति तिहारी तुमैं कहि के संदेश जू।।'

(सिंह, 2011, पृष्ठ-4463)

गुरु साहिब के दरबारी कवियों में 'आलम' का भी उल्लेख मिलता है। हिंदी साहित्य में 'आलम केलि' के रचयिता आलम के रचनाकाल को लेकर विद्वानों में आपस मतभेद हैं, परंतु समय के अनुसार देखा जाए तो यह रीतिकालीन आलम कवि हैं, उसके अनुसार इनकी रचनाएँ आलम केलि, आलम के कवित्त, सुदामा चरित आदि हैं। 'सुखदेव' कवि की अधिकतर रचनाएँ आध्यात्मिक हैं, जिनमें अध्यात्म प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा प्रमुख हैं। ज्ञान प्रकाश और गुरु महिमा की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ काशी नागरी प्रचारिणी सभा में उपलब्ध हैं। 'सेनापति' गुरु साहिब जी के दरबार के प्रमुख कवि थे। उन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं—गुरु शोभा, चाणक्य नीति भाषा, सुखसैन ग्रंथ। 'गुरु शोभा' में उन्होंने गुरुजी के आनंदपुर छोड़ने के पश्चात् के जीवन और निर्वाण काल तक की घटनाओं को चित्रित किया। 'चाणक्य नीति भाषा' ग्रंथ संस्कृत में रचित चाणक्य नीति का भाषा रूपांतरण है। इस ग्रंथ को उन्होंने गुरु दरबार में रहकर लिखा :

'गुरु गोबिंद की सभा महिं लेखक परम सुजान।
चणाकै भाषा करी कवि सेनापति नाम।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ 107)

'हंसराम' कवि भी गुरु साहिब के दरबारी कवि थे। इनकी कुछ मुक्तक रचनाएँ 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ' में उद्धृत हैं। इन्होंने गुरु साहिब जी के आदेश पर महाभारत के 'कर्ण पर्व' का भाषा रूपांतर किया था। इन्होंने इसकी रचना संवत् 1752 में शुरू की थी, जिसका वर्णन उन्होंने एक छंद के माध्यम से बताया है :

'संवत् सत्रह सै बरस बाबन बीतनहार।
भाग बदि तिथि दूज को दिन मंगलवार ताँ
हंसराज ताँ दिन करयो 'करन परब' आरंभ।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-108)

इस रचना के बाद गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें बहुत-सा धन पुरस्कार के रूप में दिया। इन रचनाओं के अतिरिक्त इनकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है। इनकी अधिकतर मुक्तक रचनाएँ महाभारत के कर्ण पर्व की हैं। यह पुस्तक आज भी हस्तलिखित रूप में उपलब्ध है। जब उन्होंने अपनी रचना का समापन किया तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें बहुत-सा धन पुरस्कार के

रूप में दिया, जिसका उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं :

'प्रथम कृपा करि राख कर, गुरु गोबिंद सिंह उदार
टका करे बकसीस तब, मो को साठी हजार।
ताको आयसु पाइ कै, करण परब मैं किन
भाषा अरथ विचित्र करि, सुनियो सुकवि प्रबीन
जथा अरथ जैसो सुन्यो, करन परब को कानु
गुरु गोबिंद की कृपा ते, सो हम कारयो बषानु।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-108)

'कुबेरेश' कवि का नाम दशम गुरु के दरबारी कवियों में उल्लेखनीय है। उन्होंने महाभारत के 'द्रोण पर्व' का भाषा रूपांतरण किया। इस ग्रंथ की रचना संवत् 1752 में की गई, जिसका वर्णन वे एक पंक्ति द्वारा करते हैं :

'संवत् सत्रह सै अधिक बावन बीते और
ता मैं कवि कुबरेश को कियो ग्रंथ को डौर।।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-111)

गुरु साहिब के दरबारी कवियों ने अधिकतर रचनाएँ गुरु साहिब को केंद्र में रख कर की। उसी प्रकार कुबरेश कवि ने 'द्रोण पर्व' में नौ गुरुओं की परंपरा का उल्लेख कर दशम गुरु का परिचय देते हुए अपने गाँव का वर्णन किया।

गुरु गोबिंद नरिन्द हैं तेग बहादुर नन्द।
जिन ते जीवन है सकल भूतल कवि बुध ब्रिंद।
नदी सतुद्रव तीर तहिं शुभ आनंदपुर नाम।
गुरु गोबिंद नरिन्द के राजत सुभग सुधाम।
गंगा जमना बिच में 'बरी' ग्राम को नाम।
तहाँ कवि कुरबेश को, बास करै को धाम।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-111)

'गुरुदास' गुरु साहिब जी के प्रमुख कवि थे। बावन कवियों में इनकी गणना की जाती है। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध हैं—'कथा हीर राँझा की' और 'सखी हीरा घाट की'। 'कथा हीर राँझा की' प्रेम-कथा है तथा 'सखी हीरा घाट की' रचना गुरु गोबिंद सिंह जी को समर्पित है। इसमें उनके संपूर्ण जीवन का चरित्र-चित्रण है। 'गोपाल राय' भी गुरु साहिब के दरबारी कवियों में शामिल हैं। इस कवि के जीवन-मृत्यु की कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनकी एकमात्र रचना 'अनुभव उल्लास' उपलब्ध है। यह ग्रंथ 19 रोला छंद का है। इस ग्रंथ के आरंभ में ही वाहेगुरु की स्तुति की गई है :

'नमो सचिदानंद अपन पौ परम अनूपा,
गुरु गोबिंद गणेश सारदा सकल सरूपा।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-116)

कई विद्वानों का मानना है कि गोपाल राय दशम गुरु के दरबारी कवि नहीं थे, परंतु उनकी रचना के आरंभ तथा अंत में गुरु साहिब की स्तुति है, जिस कारण यह कहना सार्थक होगा कि वह गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवि थे :

'गुरु गोबिंद प्रताप ते, काटि आहि मम फास।
जन गोपाल विचारकै, कह्यो अनुभव उल्लास।।'

(चौधरी, 1976, पृष्ठ-116)

'टहकन' की गणना भी गुरु साहिब के दरबारी कवियों में की जाती है। 'गुरु-प्रताप-सूर्यग्रंथ' में टहकन कवि का नाम शामिल है। इनकी दो रचनाएँ मिलती हैं—अश्वमेध पर्व का भाषा रूपांतरण और रतनदाम। अपनी रचनाओं के आरंभ में उन्होंने गणेश की वंदना की है। सिख परंपरा में टहकन के गुरु साहिब के दरबारी कवि होने का पता उनकी रचना अश्वमेध पर्व के भाषा-रूपांतरण से लगाया जाता है। उनकी दूसरी रचना 'रतनदाम' अप्रकाशित है तथा हस्तलिखित रूप में ही उपलब्ध है। इनके बारे में कोई पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है, परंतु उन्होंने अपने रचनाकाल की जानकारी देते हुए लिखा :

संत सरदस सप्तस्त अधिक बरस खटत्रिंस।
मिति त्रयोदश आषाढ़ वदी बुधवासर शुभ।

(पन्नू, 2019, पृष्ठ-26)

'मंगल' कवि का भी गुरु साहिब के दरबार में उल्लेखनीय स्थान माना जाता है। गुरु साहिब के दरबार में जिन कवियों ने महाभारत का भाषा-रूपांतरण किया, उनमें से मंगल कवि का नाम भी शामिल है। उन्होंने महाभारत के 'शल्य-पर्व' का भाषा रूपांतरण किया। कवि कहते हैं कि गुरुजी ने प्रसन्न होकर उन्हें बहुत सारा धन उपहार में दिया। 'मंगल' कवि की रचनाएँ हमें ब्रज भाषा में अधिक मिलती हैं :

'ऊपर नरैस हूँ की, होहि सुभ बेस हूँ की,
कासमीर देस हूँ की, भरी आन धामरी
बुनी कारीगर भारी,करी खूब गुलकारी,
पहिरै भिखारी,मोल पावैं लाख दामरी
सीत हूँ को जीत लेति,ऐसी सोभा देह देति,
'मंगल' सुकवि ज्यों कन्हैया जी को कामरी
स्याम, सेत, पीरी, लाल, जरद, सबद रग,
गुरुजी गोबिंद ऐसी देति मौज पामरी'

(सिंह, 1935, पृष्ठ-370)

उन्होंने पंजाबी में भी रचनाएँ की :

'सौण न देंदी सुखी दुजणा नूँ रात दिन।
नौबत गोबिंद सिंह गुरु पातशाह दी।।'।

(पन्नू, 2019, पृष्ठ-27)

'आनंद दा वाजा नित्त वजदा आनंदपुर
सुण सुण सुध भुलदी ए नरनाह दी
भौ भिया भभिखणे नूँ लंका गढ़ वसणे दा
फिर असबारी आन्वदी ए महावाह दी
बल छड बलि जाई छपेया पताल विच्च
फते दी निशानी जैंदे दबार दरगाह दी
सवणे ना देंदी सुख दुजना नु रात दिन
नौबत गोबिंद सिंह गुर पातशाह दी।'

(बादशाह दरवेश- सोढ़ी कुलदीप सिंह, पृष्ठ 198)

'लक्खन राय' गुरु साहिब के दरबारी कवियों की सूची में शामिल हैं, परंतु उनके जन्म-मृत्यु के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनकी एकमात्र रचना 'हितोपदेश भाषा' उपलब्ध है। यह रचना दोहा और सोरठा में रचित है। 'काशीराम' दरबारी कवियों में प्रसिद्ध थे। वे औरंगजेब के सूबेदार निजामत खाँ के आश्रित कवि थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनकी एक रचना 'कनक मंजरी' का उल्लेख किया है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने काशीराम को हृदयराम की रचना 'हनुमान नाटक' (1623 ई.) के कुछ

अधूरे अंशों को पूरा करने के लिए कहा था। इसके साथ उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में रहकर 'पांडव गीत' नामक रचना को पूर्ण किया। इसके अलावा उन्होंने कुछ मुक्तक छंदों की रचना की। 'हीर' कवि का नाम दरबारी कवियों में उल्लेखनीय है। वर्तमान समय में इनका कोई ग्रंथ पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है, परंतु इनके छंद, कवित्त और छप्पर उपलब्ध हैं। 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ' में इनका नाम वर्णित है। कहा जाता है कि जब गुरुजी ने आनंदपुर को स्थापित किया था तब हीर गुरुजी की प्रतिभा के गुणगान को सुन आनंदपुर पहुँचा। उसने गुरुजी के अनेक युद्धों को प्रत्यक्ष रूप से देखा था तथा उनका वर्णन अपनी रचनाओं में किया था। जब वह आनंदपुर आए तो उन्होंने दरबार में गुरु साहिब के लिए एक कवित्त पढ़ा :

'पास ठाढ़ो झगरत झुकत दौरै मोहि
बात न करन पाऊँ महाँ बली पीर सों।
ऐसो अरु बिकट निकट बसै निस दिन,
निपट निशंक सठ घेरै फर भीर सौं
दारिद कुपूत। तेरा मरन बान्यो आज,
करि कै सलाम विदा हुजै कवि 'हीर' सों।
नातरु गोबिंद सिंह बिकल करैगे तोहि,
टूक टूक है है गाढ़े दानन के तीर सों।।'

(सिंह, 1935, पृष्ठ-375)

'हीर कवि के कवित्त वीर रस से भरपूर हैं। शैली, वर्णनात्मक विषयवस्तु एवं शाब्दिक प्रयोग की दृष्टि से भूषण कवि से साम्य रखते थे। इनमें दशम गुरु की शूरता का वर्णन है। इन सारे छंदों में दशम गुरु की शूरता का वर्णन है। सारे छंदों में गुरुजी के अस्त्र-शस्त्र और युद्धों का वर्णन है' (पन्नू, 2019, पृष्ठ-29)। इनके छंदों में अधिकतर गुरु साहिब का वर्णन दिखाई पड़ता है। उनके जीवन के बारे में इनके छंदों में कोई पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है।

निष्कर्ष

किसी भी समाज या काल को समझने के लिए उस समय का साहित्य सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। कहा गया है कि साहित्य ही समाज का दर्पण है। साहित्य ही तत्कालीन समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों को समझने में सहायक है। गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके कवियों ने भी तत्कालीन समाज और गुरु दरबार को साहित्य के रूप में प्रस्तुत किया। गुरु गोबिंद सिंह जी के विलक्षण व्यक्तित्व में कवि, योद्धा और संत का अद्भुत संगम था। मुगलों के अत्याचारों तथा चारों ओर अराजकता के कारण भी उन्होंने धार्मिक और साहित्यिक सुरक्षा के लिए अथक प्रयत्न किए। उन्होंने केवल युद्ध ही नहीं लड़े, अपितु साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी अलग भूमिका निभाई। उनके साथ उनके 52 कवियों ने भी एक उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया। उन कवियों ने अपने साहित्य के ऐसे विषयों का चयन किया, जिसमें भक्ति और वीरता दोनों की अभिव्यक्ति हो सके। इन बावन कवियों का साहित्य उनके जीवन की भाँति विशिष्ट और कला की दृष्टि से समृद्ध था। गुरु गोबिंद सिंह का दरबार, गुरु दरबारों की साहित्यिक और आध्यात्मिक परंपरा का प्रतिनिधि था और उनके कवियों ने इस परंपरा को विशिष्ट रूप देने का कार्य किया। इन कवियों ने ब्रज, फारसी और पंजाबी के विविध छंदों का प्रयोग इतनी सहजता से किया कि स्वाभाविक ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने का कार्य करते हैं। उनका विद्या दरबार इतना समृद्ध था कि आज भारतीय इतिहास में उनकी एक अलग छवि देखी जा सकती है। इन कवियों का साहित्य गुरु साहिब के योगदान को इतिहास में हमेशा अमर रखने का प्रयास करेगा।

संदर्भ

चौधरी, बी. बी. (प्रथम संस्करण-1976). *गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि*. दिल्ली : स्वास्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-63.

चौधरी, बी.बी. (प्रथम संस्करण-1976). *गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि*. दिल्ली : स्वास्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-70.

चौधरी, बी.बी. (प्रथम संस्करण-1976). *गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि*. दिल्ली : स्वास्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-74 .

चौधरी, बी.बी. (प्रथम संस्करण-1976). *गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि*. दिल्ली : स्वास्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-78 .

चौधरी, बी. बी. (प्रथम संस्करण-1976). *गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि*. दिल्ली : स्वास्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-107 .

द्विवेदी, एच. पी. (2021). *सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-58.

द्विवेदी, एच. पी. (2021). *सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-67, 68.

पन्नू, एच.एस. (2019). *पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक*. बठिंडा : पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-26.

पन्नू, एच. एस. (2019). *पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक*. बठिंडा : पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-17.

पन्नू, एच. एस. (2019). *पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक*. बठिंडा : पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-27.

पन्नू, एच. एस. (2019). *पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक*. बठिंडा : पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-29.

शुक्ल, आर. (2021). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ -5.

शुक्ल, आर. (2021). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली. प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ-183, 218.

सिंह, जे. (1935). *श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय और अमृत वाणी*. मथुरा : द यूनाइटेड सिक्ख मिशनरी सोसायटी, पृष्ठ-370.

सिंह, जे. (1935). *श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय और अमृत वाणी*. मथुरा : द यूनाइटेड सिक्ख मिशनरी सोसायटी, पृष्ठ-375.

सिंह, जे. (1935). *श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय और अमृत वाणी*. मथुरा : द यूनाइटेड सिक्ख मिशनरी सोसायटी, पृष्ठ-371.

सिंह, जे. (1935). *श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय और अमृत वाणी*. मथुरा : द यूनाइटेड सिक्ख मिशनरी सोसायटी, पृष्ठ-198.

सिंह, एम. (2002). *भारतीय साहित्य के निर्माता : गुरु गोबिंद सिंह*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृष्ठ-22.

सिंह, एम. (2002). *गुरु गोबिंद सिंह*. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, पृष्ठ-25.

सिंह, एम. (2002). *गुरु गोबिंद सिंह*. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, पृष्ठ 13.

सिंह, एम. (2002). *गुरु गोबिंद सिंह*. नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, पृष्ठ-55.

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-5569.

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-4467.

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-5723.

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-5722 .

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-5719.

सिंह, एस. (2011). *श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ*. पटियाला : भाषा विभाग, पृष्ठ-4463.

सिंह, एस.जे. (2014). *गुरु गोबिंद सिंह*. नई दिल्ली : के.के. प्रकाशन, पृष्ठ-06.